STUDY IQ PUBLICATIONS

प्रथम संस्करण

आधुनिक भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

संस्थापक की कलम से

प्रिय साथियों,

हमारी पिछली किताबों (भारत का भूगोल, भूगोल तथ्य एवं सिद्धांत, तथा भारत की राजव्यवस्था) को मिली शानदार प्रतिक्रिया के लिए हम आपको विनम्रतापूर्वक धन्यवाद देना चाहते हैं। हमारी किताबें लॉन्च होने के बाद से ही यूपीएससी सेगमेंट में अमेजन और फ्लिपकार्ट के लिए बेस्ट सेलर लिस्ट में हैं।

संघ लोकसेवा आयोग के लिए सर्वोत्कृष्ट, हमारी पूर्व की किताबों को मिली भारी सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने के अपने मिशन की दिशा में एक और कदम आगे बढा लगा रहे हैं। स्टडी आईक्यू पब्लिकेशन आपको हमारी पुस्तक 'आधुनिक भारत का इतिहास' के पहले संस्करण के साथ प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

यह पुस्तक उन चिंताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिनका सामना छात्रों को सिविल सेवा की तैयारी के दौरान करना पड़ता है। छात्र अक्सर भ्रमित होते हैं कि क्या अध्ययन करना है, कितना अध्ययन करना है, किसी विषय के लिए आवश्यक ज्ञान की गहराई और आयोग द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार। इन सबसे ऊपर, समेकित अध्ययन सामग्री की अनुपस्थिति और कई स्रोतों से सूचना हमारे छात्रों की तैयारी में बाधा डालती है।

यह पुस्तक इन समस्याओं से निपटने और छात्रों के ज्ञान के आधार में सुधार करने, उनकी तैयारी के दौरान उनके कीमती समय की बचत करने और उनके सामने आने वाली कई शैक्षणिक गलतफहमियों को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं:

- इस पुस्तक का उद्देश्य यूपीएससी की वर्तमान प्रवृत्तियों और पैटर्न के आधार पर आपकी तैयारी को केंद्रित और प्रासंगिक, पुनरीक्षण-अनुकूल और अप-टू-डेट बनाना है।
- यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की आवश्यकताएं इस पुस्तक का विशेष फोकस हैं।
- हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती है कि सामग्री स्पष्ट और आसानी से समझ में आने वाली हो, ताकि छात्र अपने लाभ के लिए अवधारणाओं को सीख सकें और याद कर सकें।
- जहां भी आवश्यक हो, हमने छात्रों को मौलिक अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए प्रासंगिक उदाहरण, ऐतिहासिक मामले और तालिकाओं को शामिल किया है।
- हमने प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रासंगिक पिछले वर्ष के प्रश्नों को शामिल किया है ताकि छात्र प्रश्न की प्रवृत्ति को समझते हुए अपने ज्ञान का परीक्षण कर सकें।
- पूरी ईमानदारी और विनम्रता के साथ, स्टडी आईक्यू टीम आपकी तैयारी में सर्वश्रेष्ठ होने की कामना करती है, और हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपकी यात्रा में आपकी मदद करेगी।

Happy Learning!!

Mohit Jindal, IIT-Bombay
Co-Founder, Study IQ Education,
Mentoring UPSC CSE Aspirants for past 7 years

विषय सूची

1. मुगल साम्राज्य का पतन.....1

1.1 उत्तरवर्ती मुगल शासन और पतन की प्रक्रिया 2

1.1.1 बहादुर शाह प्रथम/शाह आलम प्रथम का शासन (1707-1712 ई.).....2

1.1.2 जहाँदार शाह का शासन काल (1712-1713 ई.).....3

1.1.3 फर्रुखसियर का शासन काल (1713-1719 ई.).....4

1.1.4 मुहम्मद शाह (रंगीला) का शासनकाल (1719-1748 ई.).....5

1.1.5 अहमद शाह का शासनकाल (1748-1754 ई.).....7

1.1.6 आलमगीर द्वितीय का शासन (1754-1759 ई.).....7

1.1.7 शाह आलम द्वितीय/अली गौहर का शासन काल (1759-1806 ई.).....7

1.1.8 अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.).....8

1.1.9 बहादुर शाह द्वितीय/जफर (1837-1857 ई.).....8

1.2 मुगल साम्राज्य के पतन के कारण.....9

1.2.1 मुगल साम्राज्य के पतन के बारे में सिद्धांत और विचार.....9

2. क्षेत्रीय राज्यों का उदय.....13

2.1 उत्तराधिकारी राज्य.....14

2.1.1 हैदराबाद.....14

2.1.2 बंगाल.....16

2.1.3 अवध.....18

2.2 विद्रोही राज्य.....20

2.2.1 सिक्ख राज्य.....20

2.2.2 रोहिल्ला और बंगश पठान.....22

2.2.3 जाट 23

2.2.4 मराठा 23

2.3 स्वतंत्र राज्य.....27

2.3.1 केरल 27

2.3.2 मैसूर.....27

2.3.3 मैसूर का प्रशासन.....28

2.3.4 राजपूत 30

2.4 18वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ.....32

2.4.1 कृषि 32

2.4.2 व्यापार.....32

2.4.3 शिक्षा 33

2.4.4 सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन.....34

2.4.5 परिवार प्रणाली.....34

2.4.6 कला, संस्कृति और वास्तुकला.....35

2.4.7 साहित्य.....35

2.4.8 विज्ञान.....36

3. यूरोपियों का आगमन.....37

3.1 यूरोपीय बस्तियों की शुरुआत.....38

3.2 पुर्तगाली.....40

3.2.1 पुर्तगाली शाही अधिकारी.....40

3.2.2 भारत में पुर्तगालियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ.....42

3.2.3 भारत में पुर्तगाली प्रशासन और उनकी बस्तियाँ.....42

3.2.4 मुगलों से निपटना और पुर्तगालियों का पतन.....43

3.3 डच.....45

3.3.1 भारत में डच बस्तियाँ.....47

3.3.2 भारत में डचों का पतन.....48

3.4 ब्रिटिश/अंग्रेज.....48

3.4.1 ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार का विकास (1600-1744).....49

3.4.2 ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार का प्रभाव 51
3.4.3 ईस्ट इंडिया कंपनी का आंतरिक संगठन 52
3.5 फ्रांसीसी 53
3.5.1 फ्रांसीसियों का विस्तार और असफलता 53
3.5.2 एंग्लो-फ्रेंच (आंग्ल-फ्रांसीसी) प्रतिद्वंद्विता 55
3.6 डेनिश 57

4. भारत पर ब्रिटिश विजय (1756-1857) 60
4.1 बंगाल पर विजय.....61
4.1.1 बंगाल में अंग्रेजों का उदय 61
4.1.2 बंगाल का पतन.....61
4.1.3 प्लासी का युद्ध.....62
4.1.4 मीर कासिम और ईस्ट इंडिया कंपनी....64
4.1.5 बक्सर का युद्ध (1764) 65
4.2 प्रभुत्व (वर्चस्व) के लिए कंपनी का संघर्ष 67
4.2.1 कंपनी के विलय की विशेषताएँ (1757-1857).....67
4.3 मैसूर पर विजय.....68
4.3.1 एंग्लो-मैसूर युद्ध (आंग्ल-मैसूरयुद्ध).....68
4.4 मराठों पर विजय.....71
4.4.1 मराठों का राजनीतिक परिदृश्य.....71
4.4.2 आंग्ल-मराठा युद्ध.....71
4.5 सिंध पर विजय.....73
4.6 पंजाब की विजय 74
4.6.1 आंग्ल-सिक्ख युद्ध.....74

5. ब्रिटिश साम्राज्य की शासन व्यवस्था और आर्थिक नीतियों की संरचना (1757-1857). 76
5.1 कंपनी राज के तहत सरकार की संरचना..78
5.2 कंपनी राज के तहत संवैधानिक विकास...79
5.2.1 रेगुलेटिंग एक्ट (1773).....79
5.2.2 पिट्स इंडिया एक्ट (1784).....81
5.2.3 चार्टर एक्ट (1793).....82
5.2.4 चार्टर अधिनियम (1813).....83
5.2.5 चार्टर अधिनियम (1833).....84
5.2.6 चार्टर अधिनियम (1853).....85
5.3 ब्रिटिश आर्थिक नीति.....87
5.3.1 वाणिज्यिक नीति.....87
5.3.2 औद्योगिक क्रांति.....88
5.3.3 धन की निकासी.....91
5.3.4 परिवहन और संचार के साधनों का विकास.....92
5.4 भू-राजस्व नीति.....93
5.5 भू-राजस्व बंदोबस्त के प्रकार:.....93
5.5.1 स्थायी बंदोबस्त.....93
5.5.2 रैयतवाड़ी बंदोबस्त.....94
5.5.3 महालवारी/महालवाड़ी प्रणाली.....95

6. ब्रिटिश साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था..... 99
6.5.1 नागरिक सेवाएँ (सिविल सर्विस).....100
6.5.2 सेना.....102
6.5.3 पुलिस.....102
6.5.4 न्यायिक संगठन.....104
6.1 ब्रिटिश शासन के तहत सामाजिक, सांस्कृतिक और शिक्षा नीति 106
6.1.1 सामाजिक नीति.....106
6.1.2 सांस्कृतिक नीति.....106
6.1.3 शिक्षा नीति और इसका प्रभाव.....107
6.1.4 परिवहन और संचार के साधनों का विकास.....109

7. सामाजिक सुधार आंदोलन..... 110
7.1 सुधार: औचित्य.....111
7.1.1 ब्रिटिश शासन का प्रभाव.....112
7.1.2 सामाजिक परिस्थितियों ने सुधारों को बढ़ावा दिया.....112
7.2 सुधारों की पद्धति और कार्यक्षेत्र.....113
7.2.1 सुधारों का दायरा.....113
7.2.2 सुधार के तरीके.....113

7.3 सुधार आंदोलनों के प्रकार....................114

7.4 पूर्वी भारत में सुधार..............................114

7.4.1 राजा राममोहन राय और ब्रह्म समाज..114

7.4.2 पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के नेतृत्व में सुधार आन्दोलन..............................118

7.4.3 यंग बंगाल आंदोलन और हेनरी विवियन डेरोजियो..119

7.4.4 रामकृष्ण आंदोलन और स्वामी विवेकानंद 120

7.4.5 स्वामी विवेकानंद (1863-1902)......120

7.4.6 धर्म सभा...122

7.5 पश्चिमी भारत में सुधार.......................122

7.5.1 बाल शास्त्री जांभेकर (1812-1846) 123

7.5.2 परमहंस मंडली................................123

7.5.3 गोपाल गणेश आगरकर (1856-1895) 123

7.5.4 गोपालहरि देशमुख 'लोकहितवादी' (1823-1892)...............................124

7.5.5 प्रार्थना समाज...................................124

7.5.6 सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी..........125

7.5.7 सोशल सर्विस लीग..........................127

7.6 दक्षिण भारत में सुधार आंदोलन............127

7.6.1 श्री नारायण गुरु...............................128

7.6.2 आत्म-सम्मान आंदोलन.....................129

7.6.3 मंदिर प्रवेश आंदोलन........................130

7.6.4 न्याय आंदोलन.................................131

7.7 पारसियों द्वारा किया गया सुधार............131

7.7.1 सेवा सदन.......................................131

7.8 सिंह सभा आंदोलन...............................132

7.8.1 सिंह सभा आंदोलन का उद्देश्य..........132

7.8.2 अकाली आंदोलन (गुरुद्वारा सुधार आंदोलन).......................................132

7.9 उत्तर भारत में सुधार आन्दोलन..............133

7.9.1 दयानंद सरस्वती और आर्य समाज......133

7.9.2 दयानंद सरस्वती और आर्य समाज......134

7.9.3 आर्य समाज में मतभेद.....................135

7.9.4 देव समाज.......................................136

7.10 मुसलमानों के बीच सुधार आंदोलन........136

7.10.1 वहाबी/वलीउल्लाह आंदोलन.............136

7.10.2 फराजी आंदोलन..............................137

7.10.3 सर सैयद अहमद खान और अलीगढ़ आंदोलन...137

7.10.4 अलीगढ़ आंदोलन 138

7.10.5 टीटू मीर आंदोलन...........................139

7.10.6 अहमदिया आंदोलन.........................139

7.10.7 देवबंद संप्रदाय (स्कूल)...................140

7.11 अन्य सुधार आंदोलन............................140

7.11.1 थियोसोफिकल आंदोलन...................140

7.11.2 भारत धर्म महामंडल........................141

7.11.3 भारतीय सामाजिक सम्मेलन..............141

7.12 सुधार आंदोलनों का महत्व....................141

7.13 आंदोलनों की वर्गीकृत..........................142

8. 1857 का विद्रोह और 1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन 145

8.1 1857 के महान विद्रोह से पहले सिपाही विद्रोह..146

8.1.1 महत्वपूर्ण सिपाही विद्रोह..................146

8.1.2 विद्रोह के कारण..............................146

8.2 1857 का विद्रोह 147

8.2.1 प्रमुख कारण....................................147

8.2.2 विद्रोह की शुरुआत..........................149

8.2.3 विद्रोह के केंद्र.................................150

8.2.4 विद्रोह का दमन..............................152

8.2.5 विद्रोह की असफलता का कारण.......153

8.3 1857 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन........154

8.3.1

9. पड़ोसी देशों के साथ ब्रिटिश भारत के संबंध156

9.1 आंग्ल-बर्मा संबंध.................................157

9.1.1 प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26)..157

9.1.2 द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852).....158
9.1.3 तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885) 159
9.2 आंग्ल-नेपाल संबंध 160
9.3 आंग्ल-भूटान संबंध 160
9.4 आंग्ल-अफगान संबंध.....162
9.5 आंग्ल-तिब्बत संबंध 165
9.6 ब्रिटिश भारत और उत्तर-पश्चिम सीमा...166
9.6.1 लॉर्ड कर्जन के उपाय.....166

10. जन एवं जनजातीय विद्रोह 168
10.6.1 विद्रोह के पीछे के कारक.....169
10.1 जन विद्रोह 169
10.1.1 नागरिक विद्रोह की विशेषताएं.....169
10.1.2 महत्वपूर्ण नागरिक विद्रोह 169
10.2 जनजातीय विद्रोह.....179
10.2.1 जनजातीय विद्रोहों का वर्गीकरण.....179
10.2.2 जनजातीय विद्रोहों की विशेषताएं.....179
10.2.3 मुख्य भूमि के जनजातीय आंदोलन.....180

11. 1857 से पूर्व व पश्चात् किसान आंदोलन और विद्रोह 188
11.1 किसान आंदोलनों को प्रभावित करने वाले कारक.....189
11.1.1 1) कृषि का ह्रास और गतिहीनता.....189
11.1.2 2) कृषि का व्यावसायीकरण.....190
11.1.3 3) किसान की निर्धनता.....191
11.2 भारत में किसान आंदोलनों की विशेषताएं 192
11.2.1 1857 से पूर्व.....192
11.2.2 1857 के बाद 192
11.2.3
11.3 1857 से पहले किसान आंदोलन.....194
11.3.1 नारकेलबेरिया विद्रोह (1782-1831).194
11.3.2 फराजी विद्रोह (1838-1857).....194
11.3.3 पागल पंथी (1825 से 1835).....194
11.3.4 मोपला/मप्पिला विद्रोह/मालाबार विद्रोह (1836-1854 और 1920).....195
11.4 1857 के बाद किसान आंदोलन.....195
11.4.1 नील विद्रोह (1859-60).....195
11.4.2 पाबना कृषक लीग (1870-1880)...196
11.4.3 दक्कन दंगे : 1870 का दशक.....197
11.5 किसान आंदोलनों का विश्लेषण.....198

12. राष्ट्रवाद का विकास और कांग्रेस की स्थापना 199
12.1 आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास के लिए उत्तरदायी कारक 200
12.1.1 देश का प्रशासनिक एकीकरण.....200
12.1.2 देश का आर्थिक एकीकरण.....200
12.1.3 आधुनिक पश्चिमी विचारों को आत्मसात करना.....201
12.1.4 अंग्रेजी भाषा की भूमिका.....201
12.1.5 प्रेस और साहित्य की भूमिका.....201
12.1.6 भारत के अतीत की पुनर्खोज.....201
12.1.7 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन.....202
12.1.8 मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय.....202
12.1.9 समकालीन आंदोलनों का वैश्विक प्रभाव 202
12.1.10 प्रतिक्रियावादी नीतियाँ और शासकों का नस्लीय अहंकार.....202
12.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले राजनीतिक संगठन.....203
12.2.1 बंगाल में राजनीतिक संगठन.....203
12.2.2 बंबई में राजनीतिक संगठन.....204
12.2.3 मद्रास में राजनीतिक संगठन.....204
12.2.4 लंदन में राजनीतिक संगठन.....204
12.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी).....204
12.3.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना....204
12.3.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्य 205
12.3.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महत्व.....206

12.4 राष्ट्रीय आंदोलन के चरण.....206
12.5 नरमपंथियों का दौर (1885-1905).....207
12.5.1 उदारवादियों का दृष्टिकोण.....207
12.5.2 नरमपंथी राष्ट्रवादियों का योगदान.....207
12.5.3 प्रारंभिक राष्ट्रवादियों का मूल्यांकन.....209
12.5.4 नरमपंथ चरण में जनता की भूमिका..209
12.5.5 सरकार का रवैया.....209

13. उग्र राष्ट्रवाद और स्वदेशी आंदोलन (1903-1909) का विकास..... 211
13.1 उग्र राष्ट्रवाद का दौर.....212
13.1.1 उग्र राष्ट्रवादियों का विकास.....212
13.1.2 उग्र राष्ट्रवाद का विकास.....212
13.2 बंगाल का विभाजन.....214
13.2.1 विभाजन का आधिकारिक कारण.....215
13.2.2 विभाजन के पीछे का वास्तविक उद्देश्य 215
13.2.3 विभाजन विरोधी आंदोलन.....216
13.2.4 लोगों पर विभाजन का प्रभाव.....216
13.2.5 विभाजन विरोधी अभियान.....216
13.2.6 स्वदेशी आंदोलन की विशेषताएँ.....217
13.2.7 स्वदेशी आंदोलन का विस्तार.....218
13.2.8 स्वदेशी आंदोलन के चरण:.....220
13.2.9 विभाजन की घोषणा.....220
13.2.10 स्वदेशी आंदोलन का मूल्यांकन.....221

14. कांग्रेस में विभाजन और क्रांतिकारी उग्र राष्ट्रवाद का उदय..... 222
14.1 सूरत विभाजन (1907).....223
14.1.1 सूरत विभाजन के पश्चात.....224
14.2 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार:.....225
14.2.1 प्रथम चरण (1907-1917).....227
14.2.2 भारत में क्रांतिकारी गतिविधियाँ.....228
14.2.3 विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियाँ.....230
14.2.4 षड्यंत्र.....231
14.2.5 क्रांतिकारी गतिविधियों के पतन के कारण.....232

15. प्रथम विश्व युद्ध और भारतीय राष्ट्रवाद..... 234
15.1 भारतीय राष्ट्रवाद पर विश्व युद्ध का प्रभाव 235
15.1.1 प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों पर प्रभाव.....235
15.1.2 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव....236
15.1.3 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान या उसके तुरंत बाद ब्रिटिश शासन का दृष्टिकोण 236
15.2 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियाँ.....237
15.2.1 उत्तरी अमेरिका: गदर आंदोलन.....237
15.2.2 यूरोप- बर्लिन समिति.....239
15.2.3 सिंगापुर.....239

16. होमरूल लीग आन्दोलन..... 240
16.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि.....241
16.1.1 दो अलग-अलग लीग की स्थापना.....241
16.1.2 होम रूल लीग का उद्देश्य.....242
16.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916).....244
16.2.1 लखनऊ सत्र में महत्वपूर्ण घटनाक्रम...244
16.2.2 समझौते की प्रकृति.....245
16.2.3 लखनऊ समझौते की कमियाँ.....245
16.3 मोंटेग्यू या अगस्त 1917 की घोषणा.....245
16.3.1 1917 के मोंटेग्यू घोषणा का महत्व...246
16.4 मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (भारत सरकार अधिनियम, 1919).....246
16.4.1 सुधारों का आलोचनात्मक मूल्याँकन...247

17. गाँधी जी का आगमन..... 249
17.1 दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के शुरुआती अनुभव 250
17.1.1 दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय.....250
17.1.2 गाँधी जी का आगमन और संघर्ष का उदारवादी चरण (1894-1906).....251

17.2 निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914).....252

17.2.1 पंजीकरण प्रमाणपत्रों के विरुद्ध सत्याग्रह (1906).....252

17.2.2 भारतीय प्रवासन पर प्रतिबंध के खिलाफ आंदोलन.....253

17.2.3 पोल टैक्स के खिलाफ आंदोलन.....254

17.2.4 भारतीय विवाहों की अमान्यता के खिलाफ आंदोलन.....254

17.2.5 दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी की उपलब्धियाँ.....255

17.3 गाँधीजी की भारत वापसी.....255

17.3.1 भारत में गाँधीजी के प्रारंभिक आंदोलन 257

17.4 रॉलेट एक्ट 259

17.4.1 रॉलेट एक्ट की विशेषताएं.....260

17.4.2 इस अधिनियम का प्रभाव 260

17.5 जलियाँवाला बाग हत्याकांड, 13 अप्रैल, 1919.....261

17.5.1 जलियाँवाला बाग हत्याकांड के परिणाम 262

17.5.2 हन्टर समिति द्वारा जाँच.....262

18. असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन (1919-22).....265

18.1 असहयोग का नेतृत्व करने वाली घटनाएँ (खिलाफत आंदोलन).....266

18.1.1 प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव.....266

18.1.2 रोलेट एक्ट, 1919.....267

18.1.3 जलियाँवाला बाग नरसंहार.....267

18.1.4 मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार.....267

18.2 खिलाफत का मुद्दा.....267

18.2.1 खिलाफत-असहयोग कार्यक्रम का विकास 268

18.2.2 खिलाफत के प्रश्न पर कांग्रेस का दृष्टिकोण 268

18.2.3 कांग्रेस को मुस्लिम लीग का समर्थन.269

18.3 असहयोग-खिलाफत आंदोलन की शुरूआत 269

18.3.1 कलकत्ता से नागपुर अधिवेशन तक....269

18.3.2 कांग्रेस के असहयोग कार्यक्रम के समर्थन के बाद विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया...270

18.4 असहयोग आंदोलन के मुख्य चरण.....270

18.4.1 आंदोलन की दिशा.....270

18.4.2 आंदोलन के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया.271

18.4.3 आंदोलन का प्रसार: स्थानीय बदलाव.271

18.4.4 सरकार की प्रतिक्रिया.....273

18.5 आंदोलन का अंतिम चरण 273

18.5.1 चौरी चौरा कांड और आंदोलन की वापसी 273

18.6 आन्दोलन को वापस लेने के कारण 274

18.7 खिलाफत असहयोग आंदोलन का मूल्याँकन 275

19. कृषक आंदोलन और राष्ट्रवाद (1920-1929) 277

19.1 मोपला विद्रोह (1921).....278

19.1.1 विद्रोह का प्रादुर्भाव.....278

19.1.2 आंदोलन के कारण.....278

19.1.3 परिणाम.....279

19.2 बारदोली सत्याग्रह (1928).....279

19.2.1 संकट का प्रादुर्भाव.....279

19.2.2 वल्लभभाई पटेल का नेता के रूप में उद्भव.....279

19.2.3 वल्लभभाई पटेल द्वारा अपनाए गए तरीके 280

19.2.4 राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन.....280

19.2.5 परिणाम.....280

19.2.6 आंदोलन की खामियाँ.....280

19.3 अवध किसान आंदोलन (यूपी).....280

19.3.1 आंदोलन का कारण.....281

19.3.2 परिणाम.....281

20. गुरुद्वारा सुधार और मंदिर प्रवेश के लिए संघर्ष 282

20.1 गुरुद्वारा सुधार 283

20.1.1 परिचय 283

20.1.2 अकाली आंदोलन की शुरुआत..... 283

20.1.3 एसजीपीसी के लिए अकाली की भूमिका और संघर्ष..... 284

20.2 मंदिर प्रवेश आंदोलन..... 284

20.2.1 परिचय..... 284

20.2.2 सत्याग्रह के लिए उत्साह बढ़ा..... 286

20.2.3 समझौता होना..... 286

20.2.4 केरल मंदिर प्रवेश 286

20.2.5 मंदिर के अधिकारियों और सत्याग्रहियों के बीच हाथापाई..... 286

20.2.6 सत्याग्रह का नया दौर शुरू हुआ..... 287

20.2.7 सत्याग्रह से नव परिवर्तन..... 287

20.2.8 आंदोलन का परिणाम..... 287

21. स्वराजवादी पार्टी, 1920 के दशक के दौरान नई ताकतों और क्रांतिकारी गतिविधियों का उदय 290

21.1 स्वराजवादी और अपरिवर्तनवादी 291

21.1.1 अपरिवर्तनवादी (नों-चेंजर्स) 291

21.2 कांग्रेस-खिलाफत स्वराज पार्टी का गठन 291

21.2.1 परिषद में प्रवेश के लिए स्वराजवादियों के तर्क..... 291

21.2.2 परिषद में प्रवेश से इंकार करने के लिए नों-चेंजर्स अर्थात अपरिवर्तनवादियों के तर्क..... 292

21.2.3 चुनावों के लिए स्वराजवादी घोषणा पत्र 292

21.2.4 स्वराजवादी पार्टी का कार्यक्रम..... 293

21.2.5 परिषदों में स्वराजवादी गतिविधि..... 293

21.3 नों-चेंजर्स (अपरिवर्तनवादियों) द्वारा किए गए रचनात्मक कार्य 294

21.3.1 अपरिवर्तनवादियों (नों-चेंजर्स) द्वारा किए गए रचनात्मक कार्यों की आलोचना ... 295

21.4 नई शक्तियों का उदय..... 300

21.4.1 मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार..... 300

21.4.2 युवा राष्ट्रवादी:..... 300

21.4.3 समाजवादियों और साम्यवादियों से जुड़ी घटना..... 300

21.4.4 किसानों का आंदोलन..... 301

21.4.5 जाति/जातीय आंदोलन..... 301

21.5 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियाँ..... 301

21.5.1 क्रांतिकारी गतिविधियाँ..... 302

21.5.2 क्रांतिकारियों के खिलाफ सरकार की कार्रवाई..... 303

21.5.3 बंगाल..... 303

22. साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट..... 310

22.5.1 भारतीय वैधानिक आयोग की नियुक्ति के कारण..... 311

22.5.2 आयोग का उद्देश्य..... 311

22.5.3 साइमन आयोग की सिफारिशें..... 311

22.5.4 प्रांतों में..... 311

22.5.5 केंद्र में..... 312

22.5.6 साइमन कमीशन के अन्य प्रावधान..... 312

22.1 साइमन कमीशन पर विभिन्न वर्गों के विचार 312

22.2 नेहरू रिपोर्ट (1928)..... 313

22.2.1 नेहरू रिपोर्ट की सिफारिशें..... 314

22.2.2 नेहरू रिपोर्ट और रियासतें..... 314

22.2.3 नेहरू रिपोर्ट और सांप्रदायिक दुविधा .. 315

22.2.4 जिन्ना के चौदह सूत्र (1929) 316

23. सविनय अवज्ञा आंदोलन और गोलमेज सम्मेलन 317

23.1 सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू होने से पहले महत्वपूर्ण घटनाक्रम..... 318

23.1.1 गाँधीजी की ग्यारह सूत्रीय माँगें..... 319

23.1.2 दांडी मार्च (12 मार्च-6 अप्रैल, 1930) 320
23.1.3 नमक कानून की अवज्ञा का प्रसार.....321
23.1.4 सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अहिंसक विरोध.....322
23.1.5 सविनय अवज्ञा आंदोलन में लामबंदी के रूप.....323
23.1.6 आंदोलन ने लामबंदी के कई नए रूपों को लोकप्रिय बनाया जैसे:.....323
23.1.7 सविनय अवज्ञा आंदोलन में जन भागीदारी की सीमा.....324
23.1.8 सरकार का रवैया.....324
23.1.9 गाँधी-इरविन समझौता (1931).....325
23.1.10 समझौते की ओर ले जाने वाली घटनाएँ 325
23.2 कराची कांग्रेस अधिवेशन-1931.....326
23.3 गोलमेज सम्मेलन.....327
23.3.1 पहला गोलमेज सम्मेलन.....327
23.3.2 दुसरा गोलमेज सम्मेलन.....327
23.3.3 तीसरा गोलमेज सम्मेलन.....329
23.4 सांप्रदायिक पंचाट (1932).....330
23.4.1 साम्प्रदायिक पंचाट का क्या कारण है? 330
23.4.2 सांप्रदायिक पंचाट के मुख्य प्रावधान...330
23.4.3 सांप्रदायिक पंचाट पर विचार.....331
23.4.4 सुलह और पूना समझौता.....331
23.4.5 पूना समझौता का महत्व.....331
23.5 भारत शासन अधिनियम, 1935.....332
23.5.1 निष्कर्ष.....334

24. वामपंथ का उदय 337
24.1 वामपंथी समूहों के उदय के पीछे कारक.338
24.2 कांग्रेस में वामपंथ 339
24.2.1 वामपंथी दल का गठन.....339
24.2.2 वामपंथ का लक्ष्य 339
24.2.3 कांग्रेस समाजवाद.....339
24.3 साम्यवादी आंदोलन.....340
24.3.1 भारत में साम्यवादी आंदोलन के चरण341
24.3.2 प्रथम चरण (1920-1928).....341
24.3.3 दूसरा चरण (1929-34).....342
24.3.4 तीसरा चरण (1934-1940).....342
24.3.5 चौथा चरण (1941-47).....343
24.4 विशिष्ट साम्यवाद मॉडल की विफलता के कारण.....343

25. सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद के भविष्य की रणनीति पर वाद-विवाद..... 345
25.1 प्रथम चरण की बहस.....346
25.1.1 नेहरू द्वारा एक नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व 347
25.1.2 कांग्रेस के नेतृत्व द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ.....349
25.1.3 विभाजित कांग्रेस के लिए ब्रिटिश नीति 350
25.2 दूसरे चरण की बहस.....350
25.2.1 कार्यालय स्वीकृति पर विभाजित राय..351

26. प्रांतों में कांग्रेस का शासन..... 354
26.1 कांग्रेस के चुनावी घोषणा पत्र की विशेषताएं 355
26.2 1937 का चुनाव.....355
26.3 1937 के चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन..356
26.3.1 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रालयों का गठन.....356

27. 1930 और 40 के दशक में किसान आंदोलन 361
27.3.1 सविनय अवज्ञा आंदोलन और किसान आंदोलन.....362
27.3.2 सविनय अवज्ञा आंदोलन का किसान आंदोलन में योगदान.....363
27.1 किसान आंदोलन (1940 के दशक में).369
27.1.1 पृष्ठभूमि.....369
27.1.2 तेभागा आंदोलन (1946).....370

27.1.3 तेलंगाना आंदोलन 1946-1948.....371
27.2 अखिल भारतीय किसान सभा के सम्मेलन 372
28. भारतीय रियासतों में स्वतंत्रता संग्राम..... 373
28.1 रियासतों की स्थिति.....375
28.2 राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव.....375
28.2.1 रियासतों में राजनीतिक लामबंदी.....375
28.2.2 ऑल इंडिया स्टेट्स पीपल्स कांफ्रेंस (एआईएसपीसी).....376
28.2.3 रियासतों में उत्तरदायी लोकतांत्रिक सरकार की माँग.....376
28.3 रियासतों के प्रति कांग्रेस की नीति.....377
28.3.1 अहस्तक्षेप की नीति.....377
28.3.2 कांग्रेस की नीति में बदलाव.....378
28.4 एकीकरण की प्रक्रिया.....379
28.4.1 राजकोट में संघर्ष.....379
28.4.2 हैदराबाद में संघर्ष.....382
28.5 रियासतों में संघर्ष का मूल्यांकन.....386
29. द्वितीय विश्व युद्ध एवं राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया ... 388
29.1 संघर्ष के तरीके पर कांग्रेस का संकट.....389
29.1.1 जन संघर्ष शुरू करने पर गाँधीजी के विचार.....389
29.1.2 हरिपुरा अधिवेशन (1938).....389
29.1.3 त्रिपुरी अधिवेशन (1939).....390
29.1.4 त्रिपुरी अधिवेशन के पश्चात.....392
29.2 द्वितीय विश्व युद्ध.....392
29.2.1 भारतीय राष्ट्रवादी और ब्रिटिश प्रशासन की प्रतिक्रिया.....392
29.2.2 रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940).....394
29.3 अगस्त प्रस्ताव (1940).....395
29.3.1 अगस्त प्रस्ताव के प्रमुख बिंदु.....395
29.3.2 अगस्त प्रस्ताव के लिए प्रतिक्रियाएँ....395
29.4 व्यक्तिगत सत्याग्रह.....395
29.4.1 व्यक्तिगत सत्याग्रह के उद्देश्य.....396
29.4.2 व्यक्तिगत सत्याग्रह की विधि.....396
29.4.3 सत्याग्रह का प्रारंभ और अंत.....396
29.5 क्रिप्स मिशन (मार्च 1942).....397
29.5.1 क्रिप्स मिशन के आगमन के कारण...397
29.5.2 क्रिप्स मिशन के प्रमुख प्रस्ताव 397
29.5.3 क्रिप्स प्रस्तावों पर प्रतिक्रियाएँ.....398
29.5.4 क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण.....398
30. भारत छोड़ो आंदोलन, आईएनए और युद्ध के बाद का राष्ट्रीय परिदृश्य..... 401
30.1 वर्धा में कांग्रेस अधिवेशन.....402
30.2 भारत छोड़ो प्रस्ताव.....402
30.3 भारत छोड़ो आंदोलन.....403
30.3.1 आंदोलन का प्रसार.....403
30.3.2 आंदोलन की प्रतिक्रिया एवं प्रवृत्ति.....405
30.3.3 सरकारी दमन.....405
30.3.4 गाँधी का कारावास से मुक्त होना.....406
30.4 राजाजी सूत्रका प्रस्ताव और वेवेल योजना 406
30.4.1 देसाई-लियाकत समझौता.....408
30.4.2 वेवेल योजना: शिमला सम्मेलन.....408
30.5 आजाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) 409
30.5.1 प्रथम चरण- आईएनए की नींव.....409
30.5.2 सुभाष चंद्र बोस और आई.एन.ए.....410
30.6 युद्ध के बाद का राष्ट्रीय परिदृश्य.....411
30.6.1 ब्रिटेन में सत्ता परिवर्तन.....411
30.6.2 केंद्र और प्रांतों में चुनाव.....412
30.6.3 आईएनए पर मुकदमा.....413
30.7 कैबिनेट मिशन (मार्च 1946).....416
30.7.1 कैबिनेट मिशन योजना के प्रमुख प्रावधान 417
30.7.2 प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस.....421

30.8 अंतरिम सरकार 421
30.9 संविधान सभा 422
30.9.1 संविधान सभा में संकट.....423

31. स्वतंत्रता और विभाजन 425
31.1 एटली की घोषणा 426
31.1.1 एटली की घोषणा की प्रमुख बातें.....426
31.1.2 कांग्रेस और मुस्लिम लीग का मत.....426
31.2 माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947).....427
31.2.1 इस योजना की प्रमुख बातें.....427
31.2.2 माउंटबेटन की योजना का कार्यान्वयन 429
31.3 कांग्रेस और विभाजन 429
31.4 रियासतों का एकीकरण.....430
31.5 विभाजन से हुए नरसंहार 431
31.6 1909 से 1947 तक विभाजन की ओर ले जाने वाली महत्वपूर्ण घटनाएँ.....431
31.7 भारत में सांप्रदायिकता का उद्‌भव एवं प्रसार 432
31.8 द्वि-राष्ट्र सिद्धांत (टू-नेशन थ्योरी) का विकास 435

32. संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास439
32.1 ताज का शासन (1858-1947).....440
32.1.1 भारत सरकार अधिनियम, 1858.....440
32.1.2 भारतीय परिषद अधिनियम, 1861.....440
32.1.3 भारतीय परिषद अधिनियम, 1892.....441
32.1.4 भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मॉर्ले-मिंटो सुधार).....442
32.1.5 भारत सरकार अधिनियम, 1919 (मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार).....443
32.1.6 अधिनियम से संबंधित मुद्दे.....444
32.1.7 साइमन कमीशन.....445
32.1.8 सांप्रदायिक पंचाट 446
32.1.9 भारत सरकार अधिनियम, 1935.....446
32.1.10 कैबिनेट मिशन योजना (1946).....448
32.2 भारत में सिविल सेवाओं का विकास.....449
32.2.1 ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत सिविल सेवा 449
32.2.2 भारत शासन अधिनियम, 1919 और भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत सिविल सेवा.....452
32.3 ब्रिटिश भारत में न्यायपालिका का विकास 453
32.3.1 पूर्व-औपनिवेशिक युग में न्यायपालिका 453
32.3.2 अंग्रेजों के अधीन न्यायपालिका.....454
32.4 पुलिस व्यवस्था.....460
32.4.1 कार्नवालिस की भूमिका.....460
32.4.2 पुलिस प्रणाली में मेयो की भूमिका....460
32.4.3 पुलिस प्रणाली में बेंटिक की भूमिका.460
32.4.4 पुलिस आयोग (1860).....460
32.4.5 भारतीय पुलिस अधिनियम, 1861.....461
32.4.6 एंड्रयू फ्रेजर पुलिस आयोग (1902)..461

33. भारतीय प्रेस और शिक्षा का विकास..... 462
33.1 भारत में प्रेस का उद्‌भव.....463
33.2 सेंसरशिप और विनियम.....463
33.3 राष्ट्रवाद और भारतीय प्रेस.....464
33.3.1 समाचार पत्र और उसके प्रकाशक.....465
33.3.2 समाचार पत्र क्षेत्रवार.....465
33.3.3 वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट, 1878.....466
33.3.4 अधिनियम का प्रभाव.....466
33.4 उत्तरवर्ती विनियमन.....467
33.4.1 भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931.....467
33.5 प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध एवं प्रेस ..467
33.5.1 भारतीय प्रेस का प्रभाव.....468
33.6 ब्रिटिश भारत में शैक्षिक विकास.....470
33.6.1 चार्टर अधिनियम, 1813 470
33.6.2 मैकाले स्मरण-पत्र (मिनट).....472

33.6.3 वुड्स डिस्पैच ऑन एजुकेशन, 1854.473
33.6.4 थॉमसन के प्रयास.....475
33.7 ताज-शासन के तहत शैक्षिक विकास.....475
33.7.1 द हंटर कमीशन (1882).....476
33.7.2 भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 476
33.7.3 भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 477
33.7.4 शिक्षा नीति 1913 पर सरकार का संकल्प 477
33.7.5 सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19).....477
33.7.6 हार्टोग समिति, 1929.....478
33.7.7 भारत सरकार अधिनियम, 1935.....479
33.7.8 सार्जेंट शिक्षा योजना (1944).....479

34. श्रमिक वर्ग और राष्ट्रीय आंदोलन..... 483
34.1 आधुनिक उद्योगों और श्रमिक वर्ग का विकास.....484
34.1.1 चाय कंपनी की स्थापना 484
34.1.2 भारतीय रेलवे का विकास.....484
34.1.3 भारत में कपास और जूट मिलों का विकास.....484
34.1.4 श्रमिक वर्ग का विकास.....485
34.2 श्रमिक-दशाएँ.....485
34.2.1 पारिश्रमिक स्थिति.....486
34.3 प्रारंभिक चरण में राष्ट्रवादी एवं श्रमिक.486

35. विविध 494
35.1 स्वतंत्रता सेनानी और उनका योगदान 495
35.2 भारत के गवर्नर-जनरल और वायसराय..500
35.3 भारत के गवर्नर-जनरलों और वायसराय से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ.....501
35.4 महत्वपूर्ण कांग्रेस अधिवेशन.....509
35.5 समाचार पत्र और पत्रिकाएँ.....517
35.6 महत्वपूर्ण पुस्तकें.....520
35.7 ब्रिटिश भारत के दौरान प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व.....522
35.8 यूरोपियों के मध्यसत्ता का संघर्ष 525

प्रतिदर्श पेज

शाह जफर के गुरु) सम्मिलित थे। इनके कुछ उल्लेखनीय कार्यों को कुल्लियात-ए-जफर में संकलित किया गया था।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

बाबर द्वारा स्थापित शक्तिशाली मुगल साम्राज्य एक सदी से भी अधिक समय तक फलता-फूलता रहा, लेकिन सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान तनाव और तनाव के तत्व मुगल साम्राज्य की संरचना में दिखाई देने लगे। यह अब मजबूत और प्रभावी नहीं रह गया था और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक साम्राज्य केवल नाम का रह गया था।

औरंगजेब की भूमिका

मुगल साम्राज्य के पतन के बारे में सिद्धांत और विचार

औरंगजेब की भूमिका

सर जदुनाथ सरकार ने मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजेब के शासनकाल की आलोचना की। औरंगजेब की धार्मिक और दक्कन की नीतियों ने साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।

- **धार्मिक नीति:**
  - उसने राजपूतों को मुगल साम्राज्य की संरचना से अलग कर दिया।
  - वह कई मौकों पर अपने गैर-मुस्लिम विषयों/भावनाओं की संवेदनशीलता का सम्मान करने में विफल रहा।
  - उसकी नीति के परिणामस्वरूप कई मंदिरों को नष्ट कर दिया गया और जजिया को फिर से लागू कर दिया गया।
  - इसने हिंदुओं को अलग-थलग कर दिया और उन लोगों को परोक्ष रूप से सशक्त बनाया जो राजनीतिक या अन्य कारणों से मुगल साम्राज्य के विरोधी थे।
- **दक्कन नीति:**
  - गोलकुंडा, बीजापुर और कर्नाटक पर मुगल सरकार के नियंत्रण को बढ़ाने के प्रयास ने मुगल प्रशासन को चरम सीमा पर पहुँचा दिया।
  - इसने मुगल सीमा रेखा को मराठा आक्रमण हेतु प्रेरित किया, जिससे क्षेत्र में मुगल अमीरों हेतु सौंपी गई जागीरों से बकाया वसूल करना मुश्किल हो गया और उन्हें मराठों के साथ गुप्त समझौते करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

कृषि संकट

डॉ. इरफान हबीब के अनुसार 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखा गया कृषि संकट मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार था।

औरंगजेब की दक्कन नीति मराठों के बढ़ते प्रभाव, गोलकुंडा और बीजापुर जैसे दक्कन के शिया राज्यों के विद्रोही रवैये और अपने बेटे अकबर की विद्रोही गतिविधियों को नियंत्रित करने की नीति से प्रेरित थी, जिसने दक्कन में शरण ली थी। औरंगजेब 1682 में दक्कन आया और 1707 में अपनी मृत्यु तक दक्कन में रहा।

© Study IQ Publications

पिछले वर्षों के प्रश्न

प्र. निम्नलिखित में से कौन सा कथन उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान भारत पर औद्योगिक क्रांति के प्रभाव की सही व्याख्या करता है? **(यूपीएससी 2020)**

a) भारतीय हस्तशिल्प बर्बाद हो गए थे।
b) भारतीय कपड़ा उद्योग में बड़ी संख्या में मशीनें पेश की गईं।
c) देश के कई हिस्सों में रेलवे लाइनें बिछाई गईं।
d) ब्रिटिश निर्माताओं के आयात पर भारी शुल्क लगाए गए थे।

उत्तर: a)

प्र. '1813 के चार्टर अधिनियम' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

(1) इसने चाय के व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त कर दिया।
(2) इसने कंपनी के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्रों पर ब्रिटिश क्राउन (तख्त) की संप्रभुता पर जोर दिया।
(3) भारत के राजस्व अब ब्रिटिश संसद द्वारा नियंत्रित थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/ से सही हैं? **(यूपीएससी 2019)**

a) केवल 1 और 2 b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तर: **a)**

प्र. आर्थिक रूप से, 19वीं शताब्दी में भारत में ब्रिटिश शासन के परिणामों में से एक था: **(यूपीएससी 2018)**

a) भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात में वृद्धि
b) भारतीय स्वामित्व वाले कारखानों की संख्या में वृद्धि
c) भारतीय कृषि का व्यावसायीकरण
d) शहरी आबादी में तेजी से वृद्धि

उत्तर: c)

प्र. निम्नलिखित में से कौन ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवारी बंदोबस्त की शुरुआत से जुड़ा था/थे?

(1) लॉर्ड कार्नवालिस
(2 अलेक्जेंडर रीड
(3) थॉमस मुनरो

नीचे दिए गए कोड का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: **(यूपीएससी 2017)**

a) केवल 1 b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तर: c)

प्र. निम्नलिखित में से कौन भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे?

(1) दादाभाई नौरोजी
(2) जी सुब्रमण्यम अय्यर
(3) आर सी दत्त

नीचे दिए गए कोड का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: **(यूपीएससी 2015)**

a) केवल 1 b) केवल 1 और 2
c) केवल 2 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तर: d)

© Study IQ Publications

परिचय

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, भारत के अलावा एशिया और अफ्रीका के कई अन्य उपनिवेशों में राष्ट्रवादी गतिविधियों का पुनरुत्थान हुआ। राजनीतिक परिदृश्य में **मोहनदास करमचंद गाँधी** के आने से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ भारत के आंदोलन को बढ़ावा मिला।

गाँधी जी के बारे में

मोहनदास करमचंद गाँधी / एम.के. गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात राज्य के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन में अपनी कानूनी शिक्षा पूरी की और एक महत्वाकांक्षी बैरिस्टर के रूप में कानूनी पेशे के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गए। गाँधी जी हमेशा न्याय की उच्च भावना से प्रेरित थे और इस प्रकार दक्षिण अफ्रीकी उपनिवेशों में रहने वाले भारतीयों के साथ होने वाले अन्याय, भेदभाव और अपमान से बहुत आहत थे। वर्ष 1893 के आसपास, जब वे मात्र 24 वर्ष के थे, उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव के शिकार हो रहे भारतीयों के हितों के लिए संघर्ष की शुरुआत की। गाँधी जी के दृष्टिकोण का एक और पहलू यह था कि वे विचार और व्यवहार, विश्वास और कृत्यों में विभेद नहीं करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में युवास्था में गाँधी जी, 1909।

दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के शुरुआती अनुभव

गाँधी जी अपने मुवक्किल दादा अब्दुल्ला से जुड़े एक मामले के सिलसिले में 1898 में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने श्वेत नस्लवाद का विद्रूप चेहरा और एशियाई श्रमिकों के अपमान को देखा। गाँधी जी ने भारतीय श्रमिकों को उनके अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम बनाने के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने का फैसला किया। वे 1914 तक वहीं रहे जिसके बाद वे भारत लौट आए।

दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय

दक्षिण अफ्रीका के लिए भारतीय आप्रवासन 1890 तक शुरू हो गया था, जब दक्षिण अफ्रीका के श्वेत निवासियों ने चीनी बागानों पर काम करने के लिए मुख्य रूप से भारत के दक्षिण से गिरमिटिया भारतीय श्रमिकों की भर्ती की थी। इन व्यवसायों के प्रबंधन की खोज में, कई भारतीय व्यापारी सामने आए, जिनमें से अधिकांश मेमन मुस्लिम समुदाय के थे। भारतीयों के अन्य समूह, जो दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के आगमन से पहले मौजूद थे, वे पूर्व अनुबंधित श्रमिक थे, जो अपने अनुबंधों की समाप्ति के बाद दक्षिण अफ्रीका में बस गए थे और उनके बच्चे दक्षिण अफ्रीका में पैदा हुए और पले-बढ़े थे। भारतीयों के इन समूहों में से किसी की भी अच्छी शिक्षा या यहाँ तक कि अंग्रेजी भाषा के कामकाजी ज्ञान तक पहुँच नहीं थी, हालाँकि धनी व्यापारियों को केवल अंग्रेजी शब्दों का ज्ञान था, जो उन्हें व्यापार सौदे करने में मदद करते थे। संक्षेप में, हम दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं :

- **अनुबंधित भारतीय श्रमिक :** मुख्य रूप से दक्षिण भारत से, जो 1890 के बाद चीनी बागानों में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गए थे;
- **व्यापारी :** अधिकतर मेमन मुसलमान जो मजदूरों के अनुसरण में चले थे;

© Study IQ Publications

आयोजित बैठकों में अधिक समर्थन से इस पहल का स्वागत किया गया।

- हैदराबाद के मजदूर और छात्र हड़ताल पर चले गए।
- सरकार ने दमन तेज कर दिया। मारपीट और गिरफ्तारियाँ हुईं।
- 13 अगस्त, को निजाम ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को औपचारिक रूप से फहराने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- 15 अगस्त 1947 यानी स्वतंत्रता दिवस को स्वामी रामानन्द तीर्थ और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया।
- कुछ नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद राज्य की जनता ने आंदोलन को जारी रखा।
- हैदराबाद के छात्रों द्वारा सुल्तान बाजार में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।
- राष्ट्रीय झंडों से सजी ट्रेनें पड़ोसी भारतीय क्षेत्रों से हैदराबाद में भाप से चली।
- महिला दल का नेतृत्व बृज रानी और यशोदा बेन ने किया।
- निजाम और उनके प्रशासन ने आंदोलन पर जमकर नकेल कसी।
- निजाम ने इत्तिहाद उल मुस्लिमीन के रजाकारों को विरोध कर रहे लोगों पर हमला करने के लिए अर्धसैनिक बल के रूप में काम करने का अधिकार दिया था।
- इन रजाकारों ने विरोध करने वाली जनता पर सशस्त्र धावा बोल दिया।
- 29 नवंबर, 1947 को निजाम ने भारत सरकार के साथ एक स्टैंडस्टिल समझौते यानी ठहराव समझौता पर हस्ताक्षर किए। हालाँकि, दमन अभी भी तेज था और रजाकार का खतरा काफी अधिक हो गया था।

सशस्त्र विरोध और भारतीय सेना का हस्तक्षेप

- आंदोलन ने अब एक अलग रूप धारण कर लिया, यह एक सशस्त्र विरोध था। राज्य कांग्रेस ने राज्य की सीमाओं पर शिविर स्थापित किए, और कस्टम की चौकियों, पुलिस स्टेशनों और रजाकार शिविरों पर छापे मारे। लेकिन राज्य के भीतर, और विशेष रूप से तेलंगाना के नलगोंडा, वारंगल और खम्मम जिलों में, कम्युनिस्टों ने सशस्त्र विरोध को संगठित करने का बीड़ा उठाया।
- उन्होंने किसानों को दलों में संगठित किया और रजाकारों पर हमला करने के लिए हथियारों का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया।
- अगला चरण तब शुरू हुआ जब भारतीय सेना ने 13 सितंबर, 1948 को हैदराबाद पर हमला किया, निजाम ने आत्मसमर्पण किया और राज्य को भारतीय संघ के साथ एकीकृत किया गया।
- भारतीय सेना का किसानों समेत लोगों ने मुक्ति सेना के रूप में स्वागत किया। यहाँ काफी उल्लास था और राष्ट्रीय ध्वज को बड़े आनंद और स्वतंत्रता की भावना के साथ फहराया गया था।

रियासतों में संघर्ष का मूल्यांकन

- हैदराबाद और राजकोट के मामले के अध्ययन से पता चलता है कि बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा या सत्याग्रह जैसे राजनीतिक साधनों, जिन्होंने ब्रिटिश भारत में बड़े परिणाम प्रदर्शित किए, रियासतों में समान प्रभावशीलता या व्यवहार्यता नहीं प्रदर्शित कर सके।
- नागरिक स्वतंत्रता के अभाव या प्रतिनिधि संस्थाओं की कमी को देखते हुए वर्चस्ववादी राजनीति के लिए राजनीतिक स्थान बहुत छोटा था।
- इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार द्वारा इन रियासतों को प्रदान की गई अंतिम सुरक्षा ने शासकों को लोगों के विरोध का सामना करने में सक्षम बनाया।
- जिसके परिणामस्वरूप, रियासतों के शासकों में असंवैधानिक साधनों का सहारा लेने और सार्वजनिक आंदोलनों पर हमले के हिंसक तरीकों का सहारा लेने की प्रवृत्ति अधिक थी।

© Study IQ Publications